जहन्नम का बयान (अल्लाह तआला हमें उस्से महफ़ूज़ रखे)

(मुस्लिम शरीफ हिन्दी की रिवायत का खुलासा है.)

मौलाना मुहम्मद इमरान कासमी बिज़ानवी.

हिन्दी किताब एक हजार मुन्तखब हदीसे मुस्लिम शरीफ.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

1) रावी हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसउद (रदी.) रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया- कयामत के दिन जहन्नम की सत्तर हज़ार लगामे होंगी, हर लगाम को सत्तर हज़ार फरिश्ते पकडकर खिच रहे होंगे.

2) रावी हज़रत अबू हुरैरह (रदी.) रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया- तुम्हारी ये आग जिस्को इन्सान रोशन करते हे जहन्नम की गरमी से सत्तर दर्ज़े कम हे. सहाबा (रदी) ने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल! ये आग ही जलाने के लिये काफी थी. आप ﷺ ने फरमाया- वोह इस्से सत्तर दर्ज़े जियादा हे. हर दर्ज़े मे यहा की आग के बराबर गरमी हे.

3) रावी हज़रत अबू हुरैरह (रदी.) हम रसूलुल्लाह صلى الله عليه وسلم के साथ थे, आप ने एक गडगडाहट की आवाज़ सुनी. आप صلى الله عليه وسلم ने फरमाया- तुम्हे मालूम हे ये कैसी आवाज़ हे? हमने कहा- अल्लाह तआला और उस्के रसूल को खूब इल्म हे. आप صلى الله عليه وسلم ने फरमाया- ये एक पत्थर हे जिस्को सत्तर साल पहले जहन्नम मे फेका गया था, ये अब तक उस्मे गिर रहा था और अब उस्की गहराई मे पहुंचा हे.

मतलब- जहन्नम की गहराई बहुत जियादा हे. बडे ही बदनसीब हे वोह लोग जो जहन्नम का ईंधन बन्ने वाले हे. (अल्लाह हमे उस्से महफूज़ रखे)

4) रावी हज़रत समुरा (रदी.) रसूलुल्लाह صلى الله عليه وسلم ने फरमाया- बाज़े जहन्नमियो को आग उन्के टखनो तक, बाज़ो को कमर तक और बाज़ो को गरदन तक पकडेगी.

मतलब- बुरे आमाल के मुताबिक जहन्नम की आग लोगो को पकडेगी इसलिये हर बुरे काम से बचे.

5) रावी हज़रत अबू हुरैरह (रदी.) रसूलुल्लाह صلى الله عليه وسلم ने

फरमाया- जन्नत और दोज़ख मे बहस हुई, दोज़ख ने कहा- मुझे ज़ालिमो और तकब्बुर करने वालो की वजह से तरजीह हासिल हे. जन्नत ने कहा- मुझे इसलिये तरजीह हासिल हे की मुझमे सिर्फ कमज़ोर, लाचार और आजिज़ लोग दाखिल होंगे. अल्लाह तआला जन्नत से फरमयेगे- तुम तो सिर्फ मेरी रहमत हो, मे अपने बन्दो मेसे जिस पर चाहूंगा तुम्हारे ज़रिये रहमत करूंगा. और दोज़ख से फरमयेगे- मे अपने बन्दो मेसे जिस्को चाहूंगा तुम्हारे ज़रिये अज़ाब दूंगा और तुम मेसे हर एक को भरना हे, लेकिन दोज़ख नहीं भरेगी यहा तक की अल्लाह तआला उस्पर अपना पाव रख देंगे, फिर वोह कहेगी- बस, बस-बस, उस वकत वोह सिकुड जायेगी और भर जायेगी. अल्लाह तआला अपनी मख्लूक मेसे किसी पर जुल्म नहीं करेंगे, और रही जन्नत तो अल्लाह तआला उस्के लिये एक और मख्लूक पैदा फरमाकर उसे भी भर देंगे.

6) रावी हज़रत हारिसा बिन वहब (रदी.) रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया- क्या मे तुम्हे जन्नत वालो की खबर ना दू? की जन्नती कौन हे? सहाबा किराम (रदी) ने अर्ज़ किया- जी हा फरमाइये.

आपﷺ ने फरमाया- हर कमज़ोर आदमी जिसे कमजोर समझा जाता हे, अगर वोह अल्लाह तआला पर कसम खाले तो अल्लाह तआला उस्की कसम पूरी फरमा देंगे. फिर आपﷺ ने फरमाया- क्या मे तुम्हे दोज़ख वालो की खबर ना दू? दोज़खी कौन हे? सहाबा किराम (रदी) ने अर्ज़ किया- जी हा, ज़रूर फरमाइये. आपﷺ ने फरमाया- हर जाहिल, सख्त-मिज़ाज (गुस्से वाला), तकब्बुर करने वाला दोज़खी हे.

7) रावी हज़रत मस्तूर (रदी.) रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया- अल्लाह तआला की कसम, दुनिया आखिरत के मुकाबले मे इस तरह हे की जिस तरह तुम मेसे कोई आदमी अपनी उंगली दरिया मे डाल दे और फिर उस उंगली को निकालकर देखे की उस्मे क्या लगता हे.

मतलब- अल्लाह तआला की नज़र मे दुनिया की कोई एहमियत नहीं, आखिरत की बहुत जियादा एहमियत हे, इसलिये दुनिया का माल और दौलत अल्लाह तआला काफिरो को भी बहुत अधिक देते हे मगर आखिरत मे उन्के लिये कोई हिस्सा नहीं.

8) रावी हज़रत मिकदाद बिन अस्वद (रदी.) रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया- कयामत के दिन सूरज मख्लूक के इस कदर करीब होगा की सिरफ एक मील का फासला रह जायेगा. लोग अपने आमाल के हिसाब से पसीने मे डूबे हुवे होंगे. कुछ लोगो का पसीना टखनो तक होगा, कुछ का घुटनो तक, कुछ का कमर तक और कुछ का मूंह तक पसीना होगा.

9) रावी हज़रत अयाज़ (रदी.) रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया- अल्लाह तआला ने फरमाया- की तीन किस्म के लोग जन्नती हे

१] इन्साफ करने वाला हुकमरान जिसे नेकी की हिदायत दी गई हो और सदका करने वाला हो.

२] वोह शख्स जो अपने तमाम दोस्तो और रिश्तेदारो और आम मुसलमानो के लिये रहम-दिल हो.

३] वोह शख्स जो मिस्कीन और पाकदामन हो और घर के अफराद जियादा होने के बावजूद मांगने से परहेज़ करता हो.

और पांच किस्म के लोग दोज़खी हे-

१] वोह गुलाम जो अपने घर वालो से कोई मुहब्बत ना-करे.

२] वोह ख्यानत करने वाला जिस्का लालच छुपा हुआ ना-हो,

जो मामूली-सी चीज़ मे भी ख्यानत (चोरी और बददियानती) करे.

३] वोह धोखेबाज़ जो हर सुबह और शाम तुम्हारे साथ, तुम्हारे घर वालो और तुम्हारी दौलत के साथ धोखा करे.

४] कन्जूसी करने वाला जो मालदार होने के बावजूद अल्लाह की राह मे खर्च ना-करे.

५] झूठ बोलने वाला, बुरी खस्लत और बुरी बात करने वाला.

10) रावी हज़रत अयाज़ (रदी.) रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया- अल्लाह तआला ने मुझ पर ये वही की हे की आजिज़ी इख्तियार करो, कोई शख्स फखर ना-करे और कोई शख्स दूसरे पर जियादती ना-करे.

11) रावी हज़रत बरा बिन आज़िब (रदी.) रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया- ये आयते करीमा कबर के अज़ाब के बारे मे नाज़िल हुई हे तरजुमा- अल्लाह ईमान वालो को कौले साबित (कलिमा ए तौहीद) से दुनिया की ज़िन्दगी और आखिरत मे साबित कदम रखता हे. (सूरे इब्राहीम/१४,/२७) कबर मे, मुर्दे से सवाल किया

जाता हे की तेरा रब कौन हे? वोह कहता हे मेरा रब अल्लाह हे.

12) रावी हज़रत अबू हुरैरह (रदी.) रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया- जब किसी मोमिन की रूह निकलती हे तो दो फरिश्ते उसे लेकर उपर चढते हे तो आसमान वाले कहते हे की पाकीजा रूह जमीन की तरफ से आयी हे. अल्लाह तआला तुमपर और उस जिस्म पर जिसे रूह आबाद रखती थी, रहमत नाज़िल फरमाये. फिर उस रूह को अल्लाह तआला की तरफ ले-जाया जाता हे. फिर अल्लाह तआला फरमाते हे की तुम इसे आखिरी वकत के लिये (सिदरतुल मुन्तहा) ले-जाओ. आप ﷺ ने आगे फरमाया- काफिर की रूह जब निकलती हे तो आसमान वाले कहते हे की खबीस रूह ज़मीन की तरफ से आयी हे, फिर उसे कहा जाता हे की तुम उसे आखिरी वकत के लिये सिजून (जेलखाने) की तरफ ले-जाओ. फिर ये बयान करते हुवे आप ﷺ ने अपनी चादर अपनी नाक मुबारक पर रख ली थी (काफिर की रूह की बदबू ज़ाहिर करने के लिये आपने इस तरह किया)

13) रावी हज़रत आयशा (रदी) रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया-

जिस्से कयामत के दिन हिसाब लिया गया वोह अज़ाब मे मुब्तला हो गया. मेने अर्ज़ कया क्या अल्लाह तआला ने ये नहीं फरमाया- जिस शख्स को उसका नामा ए आमाल उस्के दाये हाथ मे दिया गया तो जल्द ही उस्से आसान हिसाब लिया जायेगा. (सूरे इन्शिकाक ८४, आयत ७-८) आप ﷺ ने फरमाया- इस आयत मे जिस हिसाब का ज़िकर हे वोह तो मामूली पूछताछ हे और जिस्से कयामत के दिन वास्तव मे हिसाब लिया जायेगा उसे अज़ाब दिया जायेगा.

मतलब- नेक लोगो से अल्लाह तआला आसान हिसाब लेंगे और गुनाहगार लोगो से सख्त हिसाब लिया जायेगा. इसलिये खूब जियादा ये दुआ पढिये अल्लाहुम्-म हासिबनी हिसाबंय-यसीरा. तरजुमा- ऐ अल्लाह! मुझसे आसान हिसाब लीजियेगा.

14) रावी हज़रत जाबिर (रदी.) रसूलुल्लाह ﷺ ने वफात से तीन दिन पहले फरमाया- तम मेसे हर शख्स इस हाल मे मरे की वोह अल्लाह तआला के साथ अच्छा गुमान (यानी मगफिरत की उम्मीद) रखता हो.

15) रावी हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रदी) रसूलुल्लाह ﷺ

ने फरमाया- जब अल्लाह तआला किसी कौम पर अज़ाब भेजने का इरादा करते हे तो वोह अज़ाब पूरी कौम पर आता हे, फिर लोगो को अपने-अपने आमाल के मुताबिक उठाया जायेगा.

मतलब- अल्लाह तआला का अज़ाब जब किसी इलाके मे आता हे तो उस्मे रहने वाले नेक और बद दोनों अज़ाब का शिकार हो जाते लेकिन नेक लोग कयामत के दिन जन्नत के वारिस होंगे और काफिर और मुशरिक लोग आखिरत मे जहन्नम का ईंधन बनेंगे.